आरती श्री सैणु जी की

धूप दीप घृत साजि आरती ।
वारने जाउ कमलापति ।।
मंगलाहरि मंगला ।
नित मंगल राजा रामराई को रहाउ ।
उत्तम दीयरा निर्मल बाती, तू ही निरंजन कमला पाती ।
रामा भगति रामानन्द जाने, पूरन परमानन्द बखाने ।
मदन मूरति भै तारि गोविन्दे, सैनु भणै भजु परमानन्दे ।
धूप दीप घृत साजि आरती । वारने जाउ कमलापति ।।

।।संत-महिमा।।

सुख-दुख पाप-पुन्य दिन राती ।
साधु-असाधु सुजाति कुजाति ।।
दानव देव ऊंच अरु नीचु ।
अमित सुजीवन्हु माहुरु मीचू ।।
माया ब्रह्म जीव जगदीसा ।
लच्छे-अलच्छे रंक अवनीसा ।।
कासी मग सुरसरि क्रम नासा ।
मरु मारव महिदेव गावासा ।।
सरग नरक अनुरागा बिरागा ।
निगमागम गुन दोष विभागा ।।
जड़ - चेतन गुन दोषमय, विस्व कीन्ह करतार ।
संत हंस गुन गहहिं, परिहरि वारि विकार ।।

विवरण

हे कमलापति ! हम आपके धूप, दीप एवं घी से सजी हुई आरती पर बलिहारी जाते हैं । हमेशा मंगल करने वाले राजा राम की हम मंगल

चाहते हुए मंगलाचार करते हैं । अपने उत्तम ह्रदय में अपने निर्मल प्रेम की बाती जलाकर, आप स्वच्छ हृदय वाले प्रभु तथा लक्ष्मी के पति की हम आरती करते हैं ।

आपकी भक्ति को आप ही जानते हैं, अपने पूर्ण परमानन्द का बखान कीजिए,
आपका कामदेव के समान यह सुन्दर स्प हमारे भय का अन्त करने वाला है । आपका भजन करने से हमें परम आनन्द की अनुभूति होती है । हम आपके
धूप, दीप एवं घी से सजी हुई आरती पर बलिहारी जाते हैं ।

संत महिमा

सुख और दुःख तथा पाप और पुण्य, दिन और रात के समान हैं एक को जाना है, दूसरे को आना है । सज्जन एवं दुर्जन, उत्तम जातिवाले एवं निम्न जातिवाले, देवता एवं राक्षस के बीच ऊँचनीच का भेद भाव अवश्य ही रहता है परन्तु जो सुह्रदय हैं, वह इस मृत्यु स्पी विष को ब्रह्म का ही एक जीव मानकर उन पर दया करते हैं ।

सबकी अमीरी-गरीबी, लक्ष्य एवं अलक्ष्य सव काशी के गंगा नदी में बहकर पवित्र हो जाते हैं। स्वर्ग-नरक, प्रेम- वैराग्य,गुण-दोष सभी आने - जाने वाले क्रम हैं । इन्हीं सब विकारों को हटाने के लिए विश्व में संत जनों का अवतार हुआ । संत जनों के गुणों का गान करने से हमारे मन के सभी विकार दूर हो जाते हैं ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.